

आशा भोंसले	
1. 7/3	

ASHA ARCHIVES

श्रीगणेशायनमः ॐ ब्रह्म देवाय धीमही महाब्रह्म देवाय वि
 दमही नदगास्ती धीमही तनु ब्रह्म प्रचोदयात् १ ॐ ब्रह्मदा
 रुवत कैवत कैवल्य ब्रह्म वे ब्रह्मवीकार संकं यते ब्रह्मतारग १
 मंत्रसे ॐ हरयं श्रीरीयं लक्ष्मी नारायन मंत्र आपनिनं सक
 लसे जजा गुरु ने दीया उपदेसनर नारायन गुरु लागे काः
 राम नराम तत नीरं जनर कराम ॐ हं कारे ब्रह्म प्रह नीरा करे

ता

वीष्णु आपे नीरं जनं संकर से जजा गुरु ने दीया उपदेस हरी
 नारायन लागे का नराम राम तत नीरं जनं तारगराम ॐ ह
 रीय प्रेरयं क्ष्मी नारायन मंत्र आप नीरं जनं सकल से जजा
 ह गुरु ने दीया उपदेस हरी नारायन लागे का नतुलशी मंत्र
 तार कराम ॐ विष्णु विष्णु वीस्वा उधर जोति नीरं जन प्रात अ
 धार तप्यंत थं वीज मंत्र सहें आप नीरं जन ॐ वीष्णु हीता
 वि। य विदमही महा देवाय धीमही तनुरुद प्रचोदयात् ॥ ॥

श्रीगणेशायनमः ॐ हं सो हं स परमहं स सेतवर्णं सेतवीजं
चि नमो हियं व्याप्तं सच्चिदानंदस्वरूपं सो हं ब्रह्म कौं कौं या
हं सो हं ब्रह्म ॐ ॥ ॐ क्रिं क्रिं सिं सिं रिं रिं विं विं कौं कौं ॐ अलं ॥ २
नाय ॐ कौं हं स परमहं स परमात्मा परमात्मा चि नमो हियं व्या
प्तं सच्चिदानंदस्वरूपं कौं कौं या हं सो हं ब्रह्म ॐ ॥ ॐ नमो ना
राय नाय पुरुषाय महात्मने विस्तु धस प्रधिसनाय ॐ हं
साय धिमही तनु हं स प्रचो दयात् ॥ इति ब्रह्म गायत्री ॥

ॐ परमहंसः शिवः ॐ सच्चिदानंदः तत्त्वमसि ॐ सां प्रं श्री व
ह्म ॐ इति शिव परमहंसः ॥ ॐ ब्रह्म ब्रं ब्रा ब्रह्मा सो हं ॐ ॐ ॐ ब्रह्म
ः इति ब्रह्मा परमहंसः ॥ ॐ परमहंस परमात्मा विं विं ज्योति ॐ
ब्रह्म क्लीं विष्णु वेफट् स्वाहा ॥ इति विष्णु परमहंसः ॥ उत्तर मुरव
जपित्वा ॥ धूप दीपनैवेद्यः पुष्पां वुल दद्यात् ॥ भुक्ति मुक्ति आ वाग
वन रहित हो इ प्रात जपित्वा ॥ रात्रि जपित्वा ॥ सम्यक् प्रकार सि
द्धिः सर्व कार्य साधना ॥ १ ॥ ॥ ॐ नमो आ दे स गुरु कौं ॐ तेल तेः

इसरे

लमोहं ते राजातीरी पापगसों ठे लपाइ परंता आवे लोग लुना
चरी मा दी वंत भोग मइ जत्र की मोहनी वी दि दी वंक पाल मो
हुंतीरी या आव मेरी जगती गुरु की सकती फुडो मंत्र वाचा चले
आदि त्रमंगल वार मारे सुभ्रमस्त सी दि रस्त मंगलंत्र वंतुः

॥ ॥

३

आशा नरकाधि

1. 713

ASHA ARCHIVES